पार्थी
(24)

वैश्वीकरण और हिंदी कहानी

डॉ. दत्ता शिवराम साकोळे
प्रपाठक एवं शोध निर्देशक
हिंदी विभाग, शि.म. ज्ञानदेव मोहेकर महाविद्यालय कलम, जि. उस्मानाबाद

वैश्वीकरण को समझना है तो मोटे तौर पर स्थानगत प्रतिबंध या सीमाएँ नहीं होगी। इसका मतलब यह हुआ कि जितने भी देश स्वतंत्र के नाम से हैं और अपने देश के अधीन जो भौगोलिक सीमाएँ निर्धारित की गई है, वैश्वीकरण के लिए सीमा बंधन नही रहता। ऐसे में हम कह सकते हैः कि वैश्वीकरण एक भौगोलिक प्रक्रिया है, जो राष्ट्र–राज्य के सीमाओं का अतिक्रमण कराती है। वैश्वीकरण को समझने के लिए भौगोलिक स्थिति को समझने से पूरा ज्ञान नहीं होता बल्कि आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक के आधार पर कहाँ तक सही साबित होता है, यह समझना भी आवश्यक है।

आर्थिक क्षेत्र में वैश्वीकरण बीसवी शताब्दी की परिघटना है, किंतु वस्तुतः उन्नीसवी शताब्दी के मुक्त व्यापार। इसका मूल विचार यह है – बाजार व्यापार उद्योग व्यवसाय सत्ता हस्तक्षेप नहीं करता। विश्वंभरनाथ उपाध्याय के अनुसार – मुक्त व्यवसाय, प्रकृति नियम पर आधारित है कि जीवन की प्रतियोगिता में वे प्राणी ही बचते हैं, जो समर्थ होते हैं यानि जिनमें परिस्थिति और पर्यावरण के अनुकूल अपने को बदलने और प्रतिदूरिता मं अपने को योग्य प्रवीण और सशक्त बनाने की शक्ति होती है। सर्वायवल ऑफ द फिटैस्ट मुक्त व्यवसाय या बाजार में योग्यतम और सशक्तमय ही ठरहता है।

वैश्वीकरण एक आर्थिक प्रक्रिया है, जिसके तहत आर्थिक व्यापारी में लगे मात्रात्मक प्रतिबंधो को हटाकर यह पूँजी एवं व्यापार के स्वतंत्र की हिमायती है। वैश्वीकरण की प्रमुख विशेषता पूँजी और व्यापार का उदारीकरण है। व्यापारीकरण उदरीकरण के तहत ही विश्वबैंक और अंतरर्राष्ट्रीय मुद्रा कोश के द्वारा नाना प्रकार के आर्थिक सुधार अथवा संरचनात्मक समायोजना कार्यक्रम लागू किए गए है। इस नव उदारवाद का बुनियादी सिध्दांत है, कि उसमें पूँजी और व्यापार का स्वतंत्र प्रवाह हो। अर्थात्, देशी और विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनीयों को स्थानीय इकाइयों की तरह समान अधिकार प्राप्त हो कि वे कभी – भी अपने उद्योगों और व्यापारों में श्रम और पूँजी का उपयोग मनचाहे ढंग से करें। इसमें अनेक प्रकार के सवाल उठते हैं, जैसे कि इसके लिए चालक भूमिका कौन निभाऐंगा। इसको विज्ञान के तौर पर देखा जाए तो सूचना–संसार यातायात संबंधी प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में काफी तेजी से विकास हुआ है, ऐसे में प्रौद्योगिक वैश्वीकरण के मुख्य चालक की भूमिका अदा करती है।

वैश्वीकरण की अवधारणा का व्यापक प्रसार 80 के दशक में घटी कुछ विश्वव्यापी घटनाएँ और स्थितियाँ भी जिम्मेदार नहीं है। सोवियत संघ और पूर्वी युरोप का बिखरना, बर्लिन की दीवार का गिरना, शीतयुध्द की समाप्ति, बुर्जुआ जनतांत्रिक नाटों का कमजोर पड जाना, समाजवादी सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीवाद की समाप्ति, तीसरी दुनिया के तमाम देशों में नव उपनिवेशवाद की स्थितियों, देशों और राष्ट्रों की सीमाओं का अतिक्रमण करते हुए एक नहीं प्रौद्योगिकी पर आधारित सुचना, संचार और मनोरंजन के माध्यमों का विश्वव्यापी नेटवर्क इसके आधार पर पश्चिम के विकसित देशों का सारी दुनिया पर एक तरह का आर्थिक वर्चस्व।

Scanned with OKEN Scanner

वैश्वीकरण के वर्तमान युग में किसी देश का अपना मौलिक यथार्थ नहीं रह गया है। विदेशी कंपनियों के निवेश से उत्तर आधुनिक समाज संक्रमित है। अनेक रूपों में उसकी पैठ गहरी हो रही है। डॉ. राममनोहर लोहिया के विश्व पंचायत का जो सपना था वह आर्थिक तौर पर तो सच निस्संदेह साबित हुआ है। फिर भारत देश के ही प्रांतो का यथार्थ भिन्न कैसे हो सकता है? बांग्ला, तमिल, तेलुगु आदि की कहानियों का यथार्थ वही है जो हिंदी कहानियों का। आज का तकाजा यही है कि सारे वैचारिक आग्रहों से मुक्त होकर चीजों को देखा परखा जाए।

अंतिम दशक का दौर वैश्वीकरण का है। वैश्वीकरण विचारों की पूर्णता में नहीं, विखंडन में विश्वास करती है। इसी कारण एक शब्द के अनेक पार्टिया हो रही हैं। प्रायोजित या प्रस्तुत यथार्थ मिथ्या होता है। उसके परे का यथार्थ सत्य है। कहने का तात्पर्य हो रही है कि व्यक्ति कहता कुछ और करता कुछ है। उसका आशय कुछ और होता है। इसका मतलब यह हुआ कि जमाना संशय का है। आज के समाज में हर कार्य एक विश्वास के बल पर चल रहा है। ऐसे में वैश्वीकरण में उसका मूल तत्त्व संशयवाद या निषेधवाद होगा या उसका कोई वस्तुगत सत्य नही रहेगा। कोई मूल्य नहीं रहेगा, आदर्श नहीं रहेगा जिसके आधार पर जीवन को सुलझाया जाए। वैसे देखा जाए जो सारा विश्व अविश्वास में जी रहा है। ऐसा लगता है कि आज की दुनिया के सामने या यूँ कह सकते हैं कि वैश्वीकरण में विश्वास की कमी के कारण बडा संकट है।

अंतिम दशक के कहानीकारों में वैश्वीकरण व्यवस्था में व्यक्तिवादी चेतना को कहानी के माध्यम से दर्शाया है। उसमें प्रमुख हैं उदय प्रकाश, अखिलेश, संजय खाती, दुधनाथ सिंह आदि।

उदय प्रकाश की कहानी पॉल गोमरा का स्कुटर वैश्वीकरण के दौर में मध्यवर्गीयप मनुष्य के प्रति उदारीकरण की अुनदारता की कहानी है। यह बाजारवादी, उपभोक्तावाद की ऑधी में ढहते हुए विचारों एवं अदर्षी की कहानी है, जो उत्तर आधुनिक यथार्थ के बीच मध्यमवर्गीय मनुष्य को उसकी अमानुषिक परिणति का अहसास कराती है और उदार अर्थव्यवस्था के अमानवीय चेहरे को बेनकाब कर देती है। यह एक ऐसी प्रयोगधर्मी कहानी है जिस पर अनेक सवाल भी उठाये गये है। फिर भी, बीसवीं सदी के अंतिम दौर के भारत की एक मुकम्मल तस्वीर यह कहानी हमारे सामने पेश करने में पूरी तरह सफल है।

राजधानी के राष्ट्रीय दैनिक में काम सीधे–सादे, कर्तव्यनिश्ठ हिंदी कवि राम गोपाल सक्सेन कहानी के नायक है। अत्याधिक तेजी से बदलते समय से वे हैरान है। बाजारवाद, उपभोक्तावाद और पाश्चात्य संस्कृति की हव में उन्हें अपने विचारों, मूल्यों और आदर्शो को संभाले रखना असंभव हो जाता है। वे दोन निर्णय ले लेते है। एक वे अपना नाम राम गोपाल सक्सेना से पॉल गोमरा रख लेते है। यह अंग्रेजित, तथाकथित आधुनिकता और पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव है। दो, वे एक स्कुटर खरीदने का फैसला करते है। यह उपभोक्तावाद की उन पर जीत है। हालांकि वे स्कुटर खरीदने को अपने मान्य सिध्दातों के तहत तरह–तरह से आधार प्रस्तुत करते हैं। स्कुटर की दास्तान के साथ–साथ उदय प्रकाश जी ने हमारे समय का पूरा यथार्थ निर्ममता के साथ उधेडकर सामने रख दिया है। कहानी की संवेदना से जुडी हुई सुचनाओं का अंबार इसमें है और प्रासंगिक समसायिक घटनाओं की अप्रत्यक्ष झलकिया भी हैं समय की भयावहता को उजाकर करते हुए जब कहानी पॉल गोमरा की नियती बाजारवादी, उपभोक्तावाद में पिसते हुए संपूर्ण निम्न मध्यवर्ग की नियती दिखाई पडती है। उदय प्रकाश बेहतरीन खाकानवीस हैं। खाके, किस्सागोई के

Scanned with OKEN Scanner

अंदाज में लिखे जाते हैं। यह तकनीक पॉल गोमरा में अपनाई गई है। बात सें बात खुल जाती है। लेकिन भाषा का प्रवाह गजब का है और पाठक को बॉधे रहता हैं। उनकी भाषा में व्यग्यांर्थ नए ढंग से समाहित है। वे व्यंग्य करते हुए तटस्थ भी बने रहते हैं और भोलेपन से कटाक्ष भी करते है।

संजय खाती की कहानी 'पिंटी का साबून' एक सीधे सरल ग्रामीण जीवन में उपभोक्तावाद बनाम बाजारवाद के प्रवेश की कथा है। हमारे समय के एक यथार्थ की बेहद नए ढंस से प्रस्तुति की वजह से यह कहानी खासी चर्चित रही।

बाजार में हडकंप गॉव के लोगों का उपभोक्तावाद की दौड में शामिल नहीं कर रहा, बल्कि वहॉ के बेहद हज और आत्मीय संबंधों पर भी असर कर रहा है। कहानी में पहाडी अंचल का एक सीधा सरल गॉव है। जहॉ महकदार साबुन पहले पहल पहूँचता है तो हडकंप मच जाती है। महकदार साबुन जो डिप्टीसाहब की बेटी पिंकी लगाया करती थी, एक कंपनी द्वारा विज्ञापन अभियान के लिए आयोजित कि नई दौड में गॉव के युवक को पुरस्कार के रूप में अनजाने ही वह शामील हो जाता है। युवक से हाथ साबुन क्या आता है, कि पुरे गॉव में जंगल की आग की तरह यह बात फैल गयी थी। लोग मुझे रोक लेते, कोइ बहाना खोजकर चले आते। वे चाहते हैं कि उनको साबुन दिखा दूँ। जब मैं, इनकार कर देता तो वे नाराज हो जाते, डॉट–डपट करते अलबत्ता में मुझे सूँघ जरूर लेते।

परदेशीराम वर्मा लिखित 'हैसियत' कहानी में लेखक ने वैश्वीकरण के कारण लोगों की हैसियत समय–समय पर कैसी बदल जाती है। इसकी ओर ध्यान आकर्षित किया है।

कहानी में राम लखन नामक जो अंग्रेजी के उपरांत जमीनदारी प्रथा को सरकारने उखाड फेकने या रवैया पर मेहरबात इंसान के नाम जमीन करवाते थै, रामलखन खैरात या औरों की फेंकी हुई रोटी पर पलनेवाला इंसान नहीं था। वह अपने दम पर अच्छी कमाई कमा लेता था। लडक रामेश्वर की पुत्री का विवाह वह अपने गॉव में करवाना चाहता है जहॉ वह जन्मा है, कमाई या पेट की भूख के लिए गॉव, वतन छोडा तो क्या हुआ उसे भूलाया थोडे जाता है। नये सिरे से अपनी पौत्री का विवाह हम वतन में करवा के लौटना चाहता हूँ। रामेश्वर इसके खिलाफ रहता है। बच्चे जहॉ पले बडे होते हैं उसी वातावरण में अनुकूल खुद को संभालते हैं। नये माहौल में खुद को मेल लगाने में काफी दिक्कत होती है। पिताजी मनमानी के कारण रामेश्वर चुप से लडका देखने जाता है। लडके चालाकी से देखते ही पैर छू लेते है, उसका मन प्रसन्न हो जाता है। जितना धन वह खुद बोल रहे थे, उससे ज्यादा की मॉग बडे रोब से वह खुद कर रहे थे उससे ज्यादा की मॉग बडे रोब से वह राजी करवाने में कामयाब होता है।

पहलेवाली हैसियत भूल वह अब दामाद बनने के कारण रोब जमाता हैं। रामेश्वर पिताजी की गलती पर शरमिंदा है। पिताजी जो खेती के काम में बैलों को जो जान से प्यार करते हैं, उसे दामाद ले जाकर वापस करवाने के बदले में बीस हजार रूप्ये की शर्त रखता है।

रामलखन को अपनी कही हुई बात पर अफसोस हो रहा है जो समधियों की बातों में आकर आवेश में पैसों के साथ–साथ बेबस नातिन कोक उनके घर बांध दिया था।

"अपनी हैसियत में रहो जी, अभी रामलखन जिंदा है। शादी हम कर देंगे तुम समझा मूँह मत मारो। इसने जो मॉगा है तो समझा लो हमारी हैसियत देखकर ठीक ही मॉगा है। कमाने के लिए ही न हम यहॉ से बाहर गए। तो आखिर किस दिन कमाए हैं धन। रामेश्वर को ठॉटे बात पर और अपनी बेवजह बेकार

Scanned with OKEN Scanner

वक्तव्य पर रामलखन को शर्मिंदगी महसूस हो रही है।''

इंसान को सही आदमी की परख होनी चाहिए जहॉ बच्ची को ब्याहा जा रहा है वहॉ तो खासकर लडके, समंधी, और लोगों की पहचान करवा लेनी जरूरी है। अनजान जगह, अनजान लोगों की उपरी बातों पर आकर धन तो फुकट में दे ही देते हैं। बेटी का जीवन नर्क करने के जिम्मेदारी बनते है।

'लवलीन' की कहानी सहेलियॉ वैश्वीकरण के कारण बाजारवाद की दौड में परिवार को भूलनेवाले नवीन तथा उसकी पत्नी रूचिरा जो घर में किमती वस्तूओं से ज्यादा यह उससे प्रेम चाहती थी। इस कहानी में अपने वैवाहिक जीवन उबती और उसकी कोई विकल्प निकालने की कोशिश रूचिरा इसलिए निराश है, पति–पत्नी के रिश्ते में जे शेयरिंग, केअरिंग, बहिरंग, लर्निंग और डेरिंग होनी चाहिए, जो की प्रेम की रेसिपि है, वह जीवन में नहीं हैं। रूचिरा को अपने पति नवीन का सहज साहचर्य उपलब्ध नहीं है। इस इन दोनों पति–पत्नियों के बीच जीवन की दिशा और जीने की प्रविधी को लेकर गहरा दृष्टिगोचर होता है। नवीन एक व्यवसायी है और वह उसमें इतना व्यस्त है, कि उसे यह ध्यान नहीं होता की उसकी पत्नी की उससे क्या अपेक्षाऍं हैं। रूचिरा एक चित्रकार है मगर उसकी कोई परवाह नहीं करता। उसे लगने लगता है, स्त्री के जीवन कल्लाह है। पग–पग पर उसकी इच्छा, मान–सम्मान, सत्व, महत्वाकांक्षा और स्वाभिमान की बलि चढाई जाती है।

इस तरह वैश्वीकरण के दौर में भारी बदलाव हुआ है। जिसमें तेजी से बदलती दुनिया का यथार्थ चित्रण कहानीकारों ने कलात्मक ढंग से अपने अनुभवों को अभिव्यक्त किया है।

संदर्भ सूची :

1. निर्मल वर्मा – वैश्वीकरण के दौर में, वागार्थ, फरवरी–2000, पृ. 11,12
2. विश्वंभरनाथ उपाध्याय – आलेख, वैश्वीकरण, परिवेश पत्रिका, अप्रैल–दिसंबर – 1996, पृ. 95
3. विजय कुमार – परिवेश, 1996, त्रैमासिक पत्रिका, पृ. 11
4. शशिकला त्रिपाठी – उत्तर आधुनिक समाज में भारतीय कहानी, आजकल पत्रिका, अक्तुबर–2000, पृ. 15
5. उदय प्रकाश – 'पॉल गोमरा का स्कुटर', इंडिया टुडे साहित्य वार्षिकी – 1995
6. संजय खाती – 'पिंटी का साबुन', कहानी संग्रह, पृ. 12
7. पदरदेशीराम वर्मा – 'हैसियत', और खेत नहीं, पृ. 105
8. इंडिया टुडे – सहेलियॉ, लवलीन – 1998, पृ. 50
9. मार्क्सवादी साहित्य चिंतन : इतिहास तथा सिध्दांत, शिवकुमार मिश्र
10. एक दुनिया समांतर – राजेन्द्र यादव

Scanned with OKEN Scanner